अर्थ की परिभाषा– आवर्तनशील अर्थशास्त्र का दार्शनिक आधार– आवर्तनशील अर्थशास्त्र की अवधारणा– आवर्तनशीलता की अनिवार्यता व तात्पर्य– उत्पादन व मूल्य– प्रमाण का आधारः मानव– जागृति व स्वतंत्रता– ग्राम स्वराज्य व्यवस्था का स्वरूप– योजना

अध्याय – एक

परंपरा वर्तमान को अतीत से जोडती है।

पहचानने की क्रिया/ संबंध की पहचान/ संवेदनात्मक प्रवृति न्यूनतम संचेतना का द्योतक है।

प्राण अवस्था⟶जीव शरीर⟶मानव शरीर (परिपूर्ण/विकसित मेधस)

हर इकाई में व्यंजित होने (संवेदनात्मक प्रवृति का नियोजन) एवं व्यंजित करने की क्षमता है।

मानव–मानव संबंध की पहचानः सर्वप्रथम रुप, रंग, नस्ल के आधार पर– द्वेष, भयवश विरोध

आवश्यकता की पहचानः सर्वप्रथम विषयों को पूरा करने के संदर्भ में इच्छा, विचार, आशा का नियोजन

आहार– शाकाहारः खेती, पशुपालन– आवश्यकता एवं उपयोगिता के आधार पर

मांसाहार

भय– हथियार

सुदृढ बनाने के क्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन

इस आधार पर आवश्यकताओं के स्वरूप, तादाद एवं गुणवत्ता में परिवर्तन

कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता ही परंपरा में परिवर्तन का कारण

परस्पर समुदाय में आदान–प्रदान – स्वेच्छापूर्वक/जबरदस्ती

प्राप्त वस्तु ही अर्थ

वन–वनस्पति–काष्ठ–शिला–धातु–ग्राम,कबीला

आहार, आवास, अलंकार एवं प्रजनन कार्य प्रणाली हेतु बारम्बार परिवर्तन

वस्तु और परिवार की सुरक्षा के आश्वासन के आधार पर– राज्यगद्दी– शासन

लेश मुक्ति/सद्बुद्धि,सद्प्रवृति के आश्वासन के आधार पर – धर्मगद्दी – उपदेश

इस आधार पर आम जनमानस में आस्था

समस्याः–धर्म एवं राज्य अपने स्वरूप में स्थापित नहीं हो पाए

धर्म प्रधान राज्य – असंतुलित कर संग्रह की विधि

निरंतर युद्ध से ग्रसित

उत्पादन के क्रम में ग्रामोद्योग, कुटीर उद्योग एवं वस्तु विनिमय– लाभ की प्रवृत्ति– धातु मुद्रा– पत्र मुद्रा

समस्या : श्रम मूल्य का मूल्यांकन, उसकी प्रणाली, पद्धति, नीति की स्थापना का अभाव

विज्ञान युग : नियम एवं सिद्धांत के रूप में उदय

नियमः–किसी एक को अनेक भाग में बाँटकर देखने का क्रम

सिद्धांत :– नियमों को जोड़कर एक कार्य घटना को प्रमाणित कर देने की प्रणाली–पद्धति

उपकार/उपलब्धि – दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन, आहार, आवास, अलंकार विधाओं में परिवर्तन,

केन्द्रीयकृत विधि से उत्पादन

समस्या – हथियार, विध्वंसकारी मानसिकता, बेरोजगारी का बढ़ना

अर्थशास्त्र :– अर्थ का अध्ययन

नियंत्रित विधि एवं उन्मुक्त विधि

– धातु, धातु संग्रहण, पत्रमुद्रा आधारित वस्तु मूल्यांकन – लाभ की अपेक्षा

लाभ : कम देकर अधिक लेना

कृत्रिम अभावपूर्वक लाभ–अर्जन

समस्या :– लाभ–हानि मुक्त अर्थशास्त्र व व्यवस्था को प्रणयन करने में असमर्थ

उत्पादक सदैव गरीब, वस्तु मुद्रा में कैद, व्यापार लाभोन्मादी मानसिकता से ग्रसित, मुद्रा एक मान्यता

(कला मूल्य :– उत्पादित वस्तु का आकार–प्रकार, सजावट एवं सुरक्षा विधि)

व्यापार विधि से व्यक्ति, परिवार, समाज, व्यवस्था, परंपरा सर्वत्र असफल – विकल्प की आवश्यकता

समाधान :– आवर्तनशील अर्थशास्त्र

अध्याय – दो

शास्त्र के मूल में मानसिकता, विचार, इच्छा (कल्पनाशीलता)

मानव में कल्पनाशीलता एवं इस पर आधारित कर्मस्वतंत्रता

–यही दोनों अध्ययन, शोध, अनुसंधान हेतु मूल संपदा

सभी शुभ (सर्वशुभ) का आशय :– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

मानव परिवार का समृद्धि सहज विधियों से संपन्न होना ही अर्थशास्त्र का उद्देश्य एवं इसे लोकव्यापीकरण के संदर्भ में चारों में अंतर्संबंध पहचान आवश्यक– विधिवत अध्ययन का भाग

समृद्धि के केन्द्र में रखकर अर्थशास्त्र का अध्ययन– समृद्धि, समाधान, अभय, सह–अस्तित्व

समृद्धि का धारक–वाहक :– परिवार, पारंगत मानव

मानव में आवश्यकता सहज स्वीकृति, परिवार में निश्चयन, समाज/परिवेश में अवसर

मानव में आकांक्षा एवं समाज/परिवेश में अवसर दोनों के बीच सूत्र निर्मित होना ही समृद्धि मार्ग प्रशस्त होने का उपाय

भ्रम के कारक

– लाभ और व्यापार

– संग्रह और भोग

लाभ के अनंतर लाभ और भोग के अनंतर भोग का सम्मोहन परंपरा में बढ़ रहा है।

इसको समीक्षित करने योग्य जागृति को सुलभ करना ही अर्थचिंतन, विचार , शास्त्र की महिमा

वर्तमान परंपरा – सर्वशुभ की अपेक्षा, किन्तु

संग्रह, भोग में लिप्त,

शोषण, युद्ध में तत्पर

कारण –

1. नित्य वर्तमान अस्तित्व की सटीक समझ/अध्ययन का अभाव
2. सर्वतोमुखी समाधान संपन्न मानव के अध्ययन का अभाव
3. मानवीय संचेतना के स्वरूप के अध्ययन का अभाव

स्वभाव गति संपन्न मानव का स्वरूप, मानसिकता, विचार, योजना, कार्यप्रणाली का अध्ययन कराना अर्थशास्त्र का उद्देश्य

अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन की मूल अवधारणा :–

1. अस्तित्व सह–अस्तित्व रूप में नित्य वर्तमान
2. अस्तित्व में मानव अविभाज्य
3. सह–अस्तित्व– विकासक्रम–विकास–जागृतिक्रम–जागृति – में ही संपूर्ण पद, अवस्था, दिशा, देश, कोण, आयाम, परिप्रेक्ष्य, स्थिति–गति
4. मानव ही द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता
5. प्रत्येक इकाई में अनन्त कोण
   एक से अधिक इकाई के परस्परता में दिशा, काल, देश
   प्रत्येक एक में स्थिति–गति
   इकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म रूपी आयाम
   व्यक्ति, परिवार, ग्राम रूपी परिप्रेक्ष्यों का द्रष्टा
   सह–अस्तित्व– विकासक्रम–विकास–जागृतिक्रम–जागृति– जागृतिपूर्णता

अध्ययन विधि से जागृति संभव

व्यवस्था का आधार– परिवार मानव = स्वायत्त मानव

परिवार – सीमित संख्यात्मक स्वायत्त नर–नारियों का न्यायपूर्वक सहवास :–

मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति...न्याय

आवश्यकता से अधिक उत्पादन में परस्परपूरक – समृद्धि

व्यवस्था के 5 आयाम में भागीदारी–व्यवस्था प्रमाणित

ऐसे व्यवस्था में आवर्तनशील अर्थशास्त्र (चक्राकार विधि से पूरकता) प्रमाणित होती है।

जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु

कल्पनाशीलता और कर्मस्वतंत्रता सभी मनुष्य में समान रूप में क्रियाशील – अक्षय

इच्छा, विचार, आशा बंधन से युक्त जीवन–गति

मुक्ति– समझदारी, व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी = जागृति

जागृति– जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

अनुभवमूलक विधि से अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन

समर्थ :– अनुभवमूलक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा में

निष्णात :– अनुभवगामी विधि से अध्ययन कराने में

जीवन क्रिया :– आस्वादन–चयन, विश्लेषण–तुलन, चिंतन– चित्रण, बोध–ऋतंभरा, अनुभव–प्रमाणिकता

चिंतन– मूल्यों का साक्षात्कार क्रिया,

मूल्य– स्वभाव और धर्म मूल्यों के रूप में स्पष्ट होते हैं।

हर अवस्था में अक्षुण्ण

मानव मूल्य

मूल्य, धर्म व सत्य–बोध,

परावर्तन में मूल्यों की संप्रेषणा, प्रत्यावर्तन में मूल्यों का मूल्यांकन, चिंतन है।

प्रवर्तन = अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन

बोध हेतु परंपरा का जागृत होना आवश्यक = शिक्षा, संस्कार, संविधान, व्यवस्था का मानवीयतापूर्ण होना

संपूर्ण समझ = अनुभव, बोध, चिंतन

गरिमा = स्थिति, महिमा =गति

समझा हुआ के अनुरूप निर्वाह करना = ईमानदारी

जानने–मानने में संपूर्ण मूल्य समझ में आता है

मानव मूल्य : धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

धीरता– परस्पर संबंध संतुलन का द्योतक– संबंध की पहचान और मूल्यों का निर्वाह विधि से प्रमाणित

वीरता– न्याय को सर्वसुलभ करने की प्रवृत्ति

उदारता– तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा

सदुपयोग –पोषण, संरक्षण, जीवन–जागृति व चरितार्थता

अर्थव्यवस्था का संतुलन एवं वस्तु का लाभ–हानि मुक्त विधि से उपयोग मानव–मानव संबंध के उपरांत ही संभव,

अस्तित्व = व्यापक एवं इकाई का सह–अस्तित्व,

सह–अस्तित्व – विकासक्रम–विकास–जागृतिक्रम–जागृति–जागृतिपूर्णता

संपृक्तता – भींगा, घिरा, डुबा

क्रिया– श्रम,गति,परिणाम

श्रम,	गति,	परिणाम
विश्राम	गंतव्य	अमरत्व
क्रियापूर्णता	आचरणपूर्णता	गठनपूर्णता

आशा :– आशय सहित यत्नशील रहना

दया :– पात्रता के अनुरूप शिक्षा–संस्कार(वस्तु) को सुलभ कर देना

जीने देकर जीना

कृपा :– वस्तु के अनुरूप योग्यता

मानव में मानवत्व सहित व्यवस्था के रूप में जीने की योग्यता को स्थापित कर देना

करूणा :– दया एवं कृपा का संयुक्त रूप

शिक्षा में तीनों शास्त्र का चरितार्थ करना एक आवश्यकता – मानव, देव, दिव्य से समृद्ध परंपरा – संस्कार विधा

अध्याय – तीन

आवर्तनशील – वर्तुलाकार होना

आवर्तनशील अर्थशास्त्र– तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा, समृद्धि

धन :– जीवन शक्तियाँ अनुभवमूलक विधि से शरीर के माध्यम से प्राकृतिक ऐश्वर्य पर निपुणता, कुशलता पूर्वक श्रम नियोजन के फलस्वरूप उपयोगिता और कला मूल्य संपन्न वस्तुओं का उत्पादन

अर्थ की सार्थकता :– उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन

धन का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन के रूप में साक्षात्कार

जीवन (मन) – शरीर (तन) – धन (उपयोग– शरीर पुष्टि, , सदुपयोग, प्रयोजन– जीवन में संतुष्टि)

मन शरीर को जीवंत (5 इंद्रियों का क्रियाकलाप) बनाए रखता है

मन + तन – उत्पादन– वस्तु

वस्तु का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन, इस अर्थ में आवश्यकताएं सीमित

श्रम नियोजन स्थली – धरती, वायु, जल, वन , खनिज

परिवार– परिवार समूह– ग्राम– ग्राम समूह–मंडल–मंडल समूह–क्षेत्र–राज्य–प्रधान राज्य–विश्व राज्य परिवार (10 में एक सदस्य)

आहार, आवास, अलंकार+औषधि हेतु खेती, गोपालन, ग्राम+कुटीर उद्योग

हर स्तर की समिति स्थानीय क्रियाकलाप को विधिवत समृद्ध करेगी।

उदाहरण :– मकान, सड़क, कूप, धर्मशाला, रेल, जल, वायुमार्ग

तकनीकी के आधार में ऊर्जा है।

खनिज, कोयला, विकिरणीय धातु – प्रदूषण, ताप वृद्धि– ह्रास

विकास एवं ह्रास दोनों नियम से होते हैं।

आवर्तनशील स्रोत – कचरा, सूर्य, पवन, जल, तैलीय वस्तु – धरती का संतुलन + मानव का संतुलन

मानव का संतुलन = चिंतन/साक्षात्कार, विचार शैली, जीने की कला में संतुलन (परिभाषा सहज मानव)

कृषि – उर्वरकता – ऊर्जा और नैसर्गिकता में आवर्तनशीलता

कृषि – शरीर पोषण और रोग मुक्ति हेतु वस्तु पाना

पदार्थ से प्राण

उर्वरकता – रासायनिक संरचना ही उर्वरकता का स्रोत

ऊर्जा – पुष्टि तत्व

ठोस–ठोस के साथ, तरल–तरल के साथ, विरल–विरल के साथ सह–अस्तित्व को प्रमाणित करता है।

रस+ठोस – अन्न, वनस्पति उदात्तीकरण

उद्योग –

क्रिया = श्रम, गति, परिणाम चैतन्य – जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

समझने वाला मानव जड़ – पहचानना, निर्वाह करना

परमाणु अंश – परमाणु – अणु – मिश्रित व यौगिक कार्य

परमाणु अंश, परमाणु, अणु – शुद्ध तात्विक वस्तु

अस्तित्व में अव्यवस्था का कारक–भ्रमित मानव

मानव ही अर्थ मन, तन, धन में समृद्धि को अनुभव करता है एवं व्यवहार में प्रमाणित करता है।

सह–अस्तित्व ही मूल प्रकटन, सह–अस्तित्व में हर इकाई प्रेरितः ऊर्जा/बल संपन्न, नियंत्रित, क्रियाशील

सह–अस्तित्व – विकासक्रम– विकास –जागृति क्रम–जागृति

मानव ही द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता

परमाणु अणु–बंधन और भार बंधन पूर्वक रचना– विरचना कार्यों को करते हैं।

धरती में ठोस के उपरांत ही रासायनिक रचना

धरती– ठोस, विरल

सह–अस्तित्व सहज सभी अवस्थाएँ एक–दूसरे की पूरक होना आवर्तनशीलता है।

मानव स्वयं में व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में आवर्तनशीलता को प्रमाणित होता है।

आवर्तनशील विधि से अंतर संगीत एवं बाह्य संगीत का अनुभव करना सहज है।

आवर्तनशीलता मानव का वरेण्य/ मानव सहज स्वीकृति है।इसके प्रमाणीकरण एवं निरंतरता हेतु अनुभवमूलक विधि से प्रस्तुत अवधारणाएँ मानव के लिए उपयोगी हैं।

अध्याय – चार

आवर्तनशीलता – अनिवार्यता एवं उसका स्वरूप

प्रचलन :– संग्रहवादी मानसिकता, मुद्रा संग्रह, मुद्रा का आधार स्वर्ण धातु (न्यूनतम उपयोगी)

वर्तमान में प्रतीक मुद्रा के आधार पर वस्तुओं का मूल्यांकन

प्रतीक मुद्रा – संग्रह एवं शोषण में आसान

रूप, पद, बल, विद्या का व्यापार – लाभोन्माद की मानसिकता से

+ वस्तु व्यापार + प्रौद्योगिकी व्यापार (Profit calculation & chart based)

उत्पादन – कृषि, पशुपालन, उद्योग

युद्ध सामग्री निर्माण अनावश्यक है।

संग्रह एवं भोग – तृप्ति बिन्दु किसी भी देश, काल में एक व्यक्ति को भी नहीं

जागृति(ज्ञानत्रय) ही अंतर्तुष्टि है। यही आवर्तनशील अर्थशास्त्र एवं व्यवस्था को साक्षात्कार करने का आधार है।

क्या मानव सर्वदा तृप्त हो सकता है? – भोगवादी विधि से नहीं– समाधान, समृद्धि पूर्वक निरंतरता

आवश्यकता से अधिक उत्पादन

मानव क्रियाकलाप – व्यवहार, उत्पादन, उपयोग

हस्तलाघव :– ज्ञानेन्द्रियाँ कर्मेन्द्रिय को नियंत्रित करती है।

संप्रभुता – निरंतर निश्चित

फल प्रयोजन = मानव तृप्ति – वस्तु से , मुद्रा से नहीं

श्रम नियोजन, श्रम मूल्य और मूल्यांकन विनिमय प्रणाली

वस्तु की मौलिकता यथावत्, पत्र मूल्य में परिवर्तन

प्राण–अवस्था को उन्नत करने का प्रयास असफल – मूल मानसिकता भ्रम ही कारण

मूल्य – परिवार मानव

चरित्र – समाज मानव

नैतिकता – व्यवस्था मानव

मनुष्य जागृतिपूर्ण आचरण पूर्वक सभी के लिए पूरक, सह–अस्तित्वशील हो पाता है।

बीज गुणन स्थिर नहीं है। रूप, ↑आकार , गुणवत्ता (पौष्टिकता +तैलीय तत्व) यथावत

IPR अमानवीय

अनुसंधान एवं लोकव्यापीकरण की अविभाज्यता, स्थिति–गति की अविभाज्यता, जीवन शक्ति अक्षय

आवर्तनशील अर्थव्यवस्था में समाधान, समृद्धि की सुलभता और नैसर्गिकता के संतुलन को बनाए रखना अत्यावश्यक

जीवन तृप्ति का स्रोत – न्याय, धर्म, सत्य(जागृति), अपेक्षा हर बच्चे में , युद्ध अस्वीकार्य, पर्यावरण असंतुलन अस्वीकार्य–विकल्प की आवश्यकता

वर्तमान में संस्कृति, सभ्यता, व्यवस्था – भय , प्रलोभन आधारित

समृद्धि जागृत मानव परिवार में ही हो पाता है। एक परिवार समृद्ध होने के लिए अनेक परिवार(परिवार समूह) का समृद्ध रहना अनिवार्य है।

निपुणता, कुशलता, पांडित्य परस्परता में ही परिभाषित

व्यवस्था का वैभव – न्याय, उत्पादन, विनिमय सुलभता

व्यवस्था का नित्य स्रोत – शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम कार्य प्रणाली

स्वराज्य – अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, (संविधान शास्त्र, उत्पादन कार्य शास्त्र)

सभी 30 मूल्यों की आवर्तनशीलता :– इसी संदर्भ में उत्पादन व विनिमय

श्रम–मूल्य का मूल्यांकन ग्राम सभा में संभव। ग्राम सभा ही वस्तु–मूल्य का मूल्यांकन + ध्रुवीकरण

5 समिति का कार्य :– 5 आयाम को संतुलित बनाए रखना + परस्पर संचार व अनुप्राणन संबंध

अध्याय 5

<u>उत्पादन और मूल्य</u>

समृद्धि के अर्थ में प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रमपूर्वक स्थापित उपयोगिता एवं कला मूल्य ही उत्पादन

मानव तृप्ति हेतु 30 मूल्य , तभी समाज लक्ष्य चरितार्थ

बीज–वृक्ष न्याय से विपुलीकरण, इस हेतु धरती, जल, वायु, ऊष्मा का संयोग, उर्वरकता शक्ति की आवश्यकता + आपूर्ति विधि, अनुपात

श्रम को छुपाने के कारण रासायनिक उर्वरक, यंत्र के कारण हल–बैल बेकार – लाभ की मानसिकता

समस्या :– अम्ल व क्षार की अधिकता, तादाद वृद्धि किन्तु पुष्टि की कमी

जहर/कीटनाशक का हवा + फल में घुलना

सामान्य–आकांक्षा की वस्तुओं के प्रति स्वायत्तता हर ग्राम में आवश्यक। शेष 2–4 वस्तु 10 या 100 गाँव में पूरी

स्वायत्त मानव – परिवार मानव – व्यवस्था मानव

शरीर का पोषण, संरक्षण – उपयोग

समग्र व्यवस्था में भागीदारी– सदुपयोग

जागृति एवं उसकी परंपरा में भागीदारी– प्रयोजनीयता– सह–अस्तित्व में प्रमाणित होना

मूल धन :– श्रम शक्ति के रूप में मानव में ही है। – स्वत्व

उत्पादन – सामान्य आकांक्षा, महत्व आकांक्षा

भोग, बहुभोग, संग्रह, युद्ध की जगह उपयोग, सदुपयोग, व्यवस्था में भागीदारी

वर्तमान में जो सर्वाधिक सुविधा सुनिश्चित करता है, उसकी शासन की मानसिकता। संग्रह से श्रम की मानसिकता समाप्त होती है।

अस्तित्व में सह–अस्तित्व सहज समृद्धि है। लाभ–हानि का कोई स्थान नहीं।

पुरूषार्थ का तात्पर्य– उत्पादन कार्य

परमार्थ का तात्पर्य– जागृतिपूर्णता

तकनीकी– मानव सहज सामान्य आकांक्षा, महत्वाकांक्षी संबंधी वस्तुओं को उत्पादन करने की विधि विहित चित्रण, विश्लेषण सहित मानसिकता

ज्ञानः– जानना मानना, पहचानना, निर्वाह करना

विज्ञानः– तर्कसंगत विधि से ज्ञान को प्रवाहित करने का विचार – कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी

निर्णयवादी– प्रमाणित करने वाला, परिमाणित करने वाला

वर्तमान में भय, प्रलोभन, आस्थापूर्वक उत्पादन–कार्य में प्रवृत्ति

उत्पादन, शोषण, अपहरण.....खनिज तेल, कोयला :– परिणामस्वरूप–प्रदूषण(परिणाम), धरती का स्वास्थ्य खराब(करतूत)

अपहरण.....खनिज तेल, कोयला :– परिणामस्वरूप–प्रदूषण (परिणाम), धरती का स्वास्थ्य खराब(करतूत)

खनिज, वनस्पति के अनुपात से ऋतु–काल का नियंत्रण

धरती के सतह पर उपलब्ध संसाधनों से समृद्धि, समाधान, अभय, सह–अस्तित्व पूर्वक जीने की कला विकसित करना आवश्यक है।

द्रोह :– सत्ता संघर्ष   विकल्प :– सार्वभौम व्यवस्था

गलती को गलती से, अपराध को अपराध से, युद्ध को युद्ध से – संविधानपूर्वक – शक्ति केंद्रित शासन

सार्वभौम व्यवस्था की मानसिकता–ज्ञान, विवके, विज्ञान पूर्वक संपन्न होना

ऐसी गति संपन्नता ही मानवाधिकार है जो चेतना विकास मूल्य शिक्षा पूर्वक सफल होती है।

मानवाधिकार संस्थाएँ :– विपदा–आपदा ग्रस्त समुदायों को राहत पहुँचाने की मंशा – सुविधा केन्द्रित

ब्रह्माण्डीय किरणों सहित यह धरती ही प्रत्येक व्यक्ति के लिए नैसर्गिक है। – सह–अस्तित्व सूत्र के अनुरूप

भय, प्रलोभन, आस्था के मूल में भ्रम– निराकरण हेतु जागृति (परम ज्ञान, दर्शन, आचरण)

शुभ रूप में ही नित्य वैभव एवं गति है। परिवार एवं व्यवस्था अविभाज्य है।

अच्छे मानव तो हुए हैं, पर परंपरा नहीं हो पाई है।

परंपरा में धर्म एवं राज्य केन्द्रित संविधान–आधार शक्ति केन्द्रित शासन, पाप–पुण्य, भक्ति–विरक्ति, सद्कर्म

सर्वतोमुखी समाधान का धारक–वाहकः जागृत मानव

हर मानव जागृत परंपरा में अर्पित होकर स्वयं जागृत होना स्वाभाविक है।

भ्रमित व्यक्ति के वाणी एवं कर्म में भेद,

वर्तमान में उपलब्धि – संग्रह, सुविधा, पैसा

शिक्षा–संस्कार – स्वायत्त मानव – परिवार ....विश्व परिवार – विधि :– जीने देकर जीना

वस्तु मूल्य – शिष्ट मूल्य – स्थापित मूल्य – मानव मूल्य – जीवन मूल्य

मानव से संपादित होने वाली संपूर्ण व्यवहार कार्यकलाप (अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन) जीने की कला है। उपयोगिता आवश्यकता के आधार पर प्रसवित होता है।

उपयोगिता – सदुपयोगिता – प्रयोजनशीलता का चित्रण

उत्पादित वस्तु :– समयबद्ध विधि से निपुणता, कुशलता व पांडित्यपूर्वक प्राकृतिक ऐश्वर्य पर किया गया श्रम नियोजनपूर्वक पाया गया फलन – उपयोगिता सुन्दरता संपन्न वस्तुएँ।

उपयोगिता :– शरीर पोषण, संरक्षण, समाज–गति में तन, मन, धन का नियोजन

= परिवार व्यवस्था में नियोजन

सदुपयोगिता :– अखण्ड समाज क्रम में नियोजन

सार्वभौम व्यवस्था क्रम में नियोजन

संस्कृति–सभ्यता क्रम में नियोजन

प्रयोजनशीलता :– जागृति प्रमाणित (सुनिश्चित) करने में नियोजन

पीढ़ी–दर–पीढ़ी परम त्रय को प्रमाणित करने के क्रम में नियोजन

प्रमाण गति क्रम में नियोजन

हर नीचे की क्रिया ऊपर की क्रिया की कसौटी में संतुलित, नियंत्रित होने की व्यवस्था है। यही नियंत्रण व संतुलन का सूत्र है।

अध्याय 6 : प्रमाण का आधार – मानव

प्रमाण का संपूर्ण स्वरूप : समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी,

भागीदारी(कारीगरी): व्यवहार, व्यवसाय (उत्पादन–कार्य), विनिमय

प्रत्येक परंपराएँ अपने स्वरूप में मौलिक हैं।

अंशो का गतिपथ स्वाभाविक रूप में वर्तुलाकार, अपरिपूर्ण वर्तुलाकार, अण्डाकार

मानवीय आचरण :– समाधान, समृद्धि का धारक–वाहक

व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण

तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा

सह–अस्तित्व ज्ञान एवं जीवन ज्ञान का अभाव = भ्रम

वर्तमान में व्यापार – वस्तु, युद्ध, धर्म, ज्ञान का

प्रमाणित होने का स्वरूप – अनुभव बल, विचार शैली, जीने की कला का अविभाज्यता

ज्ञान, दर्शन, आचरण, विवेक एवं विज्ञान संपन्नता

विवेक– जीवन का अमरत्व, शरीर का नश्वरत्व, व्यवहार के नियमों के प्रति पूर्ण जागृति

मानवीयतापूर्ण आचरण = मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य क्रियाकलाप

चरित्र का पोषण मूल्य, मूल्य का पोषण नैतिकता, नैतिकता का पोषण चरित्र

मध्यस्थ दर्शन मध्यस्थ सत्ता, क्रिया, गति एवं जीवन का प्रतिपादन है।

पंचकोटि मानव के स्वभाव, विषय, दृष्टि एवं प्रमाण का विवरण

लक्ष्यमूलक व मूल्यमूलक विधि से जीने देकर जीना

मूल्यमूलक, लक्ष्यमूलक विधि से जीने की कला, विचारशैली और अनुभव बल के साथ जीना मानव संस्कारनुषंगीय इकाई होने का प्रमाण है।

अध्याय 7 : जागृति और स्वतंत्रता

कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति :– सह–अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना

तन–मन–धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा

तकनीकी – पीढ़ी दर पीढ़ी समृद्ध,

लाभ व प्रदूषण – समस्या

ईंधन संबंधी आवर्तनशीलता आवश्यक :– प्रवाह बल, सौर ऊर्जा, पवन, कचरा, गोबर

मानसिकता + स्वस्थ शरीर + हस्तलाघव सहित श्रम = उत्पादन–कार्य

विकल्प के प्रति निष्ठा की समस्या

1. उत्पादन को स्वचालित बनाने का प्रयास
2. उद्योगों की केंद्रीकृत प्रणाली

जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान – अखण्डता, सार्वभौमिकता

उत्पादन, विनिमय में पूरकता, पूरक विधि से ही उपयोग, सदुपयोग

अध्याय 8 : परिवारमूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था का स्वरूप

5 आयामों में सूत्रित एवं व्याख्यायित

पाँचों आयाम में परस्पर सामरस्यता

एक आयाम का विविध स्तर पर सामरस्यता/

आधार– स्पष्ट उद्देश्य व निष्ठा

जीवन जागृति एवं सर्वमानव शुभ के अर्थ में जीने की कला विधि सहज ही व्यवस्था का स्वरूप होना नियति क्रम का तृप्ति बिन्दु है।

विनिमय का आधार – श्रम विनिमय विधि

उत्पादन – सामान्य आकांक्षा (स्थानीय सर्वेक्षण के आधार पर)

महत्व–आकांक्षा (स्थानीय ग्राह्यता के आधार पर)

समृद्धि का आधार – आवश्यकता से अधिक उत्पादन + सदुपयोग + सुरक्षा

छोटे उद्योग–ग्राम सभा   बड़े उद्योग विश्व परिवार सभा

वस्तु व वस्तु मूल्य अविभाज्य हैं।

समाज व व्यवस्था अविभाज्य हैं।

<u>श्रम मूल्य की पहचान व मूल्यांकन</u>

कर्तापद–मनुष्य, कर्तव्य – करने का प्रमाण

अर्थशास्त्र व्यवस्था अपने अकेलेपन में कोई परिभाषा प्रतिष्ठा नहीं होती। परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का एक भाग

मूल्यांकन के मूल में मानव प्रधान वस्तु है।

स्वराज्य व्यवस्था का आधार परिवार (परिवार का आधार स्वायत्त मानव एवं परिवार मानव)

व्यवहार (मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति), कार्य (आवश्यकता से अधिक उत्पादन, परस्पर पूरक)

शेष प्रकृति नियमों से निबद्ध और व्यवस्था के रूप में है।

मानव समझदारी पूर्वक परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदार

न्याय – परिवार मानव – उपयोग

धर्म – व्यवस्था मानव – सदुपयोग

सत्य – जागृत मानव – प्रयोजनशील

वस्तु मूल्यांकन के लिए मानव का शक्ति नियोजन, समय एवं साधन सहित प्राकृतिक ऐश्वर्य की समीचीनता का योगफल

शरीर का संयोजन एवं (निपुणता, कुशलता, पांडित्यपूर्ण)मानस के साथ कार्य करना

समान श्रम के साथ विनिमय। वस्तु–उत्पादन में गुणवत्ता पर भी ध्यान

परिवार सीमा में कम–ज्यादा श्रम का आँकलन नहीं।

आवर्तनशील अर्थशास्त्र की उपलब्धि –

1. आर्थिक असमानता समाप्त + समृद्धि हर परिवार में
2. प्रतीक मूल्य से छूटकर + वस्तु मूल्य/प्राप्त मूल्य से तृप्ति
3. संग्रह, शोषण से मुक्ति + परिवार मानव के रूप में दायित्व, कर्तव्य का निर्वाह
4. स्वराज्य व्यवस्था क्रम में विश्व परिवार व्यवस्था तक भागीदारी

तीन परिप्रेक्ष्य – नैसर्गिकता

अध्याय 9 – परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना

पूर्व तत्परता व आंकलन – जानकारी, सर्वेक्षण एवं आंकलन

मनुष्य – जनसंख्या, आयु, वर्ग, स्त्री, पुरूष, लड़का, लड़की, शैक्षणिक योग्यता, रोजगार, व्यापार

सामान्य सुविधा – खेत, खनिज, वन, वनौषधि, आवास, ईंधन, प्रकाश, जल–मल व्यवस्था, तालाब, नदी, नहर......

उत्पादन–संबंधी आंकलन :– भूमि–कृषि, पड़ती, वन–संभावित, सिंचाई के स्रोत, ऊर्वरक, बीज, औजार, यंत्र, कीटनाशक, पशुधन

हस्तशिल्प – चित्रकला, मूर्तिकला, बुनाई, कढ़ाई, छपाई, रंगाई, सूत काटना – लोगों की संख्या + तकनीकी

ग्रामशिल्प – धातुकला, रेशम–काष्ठ कला, मिट्टी एवं चर्मकला, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग

सेवा कार्य में लगे लोगों का सर्वेक्षण

विनिमय संबंधी आंकलन – दूकान, व्यक्ति, स्टोरेज, क्या–क्या सामान, उपयोगिता व मूल्य

शिक्षा संबंधी आंकलन – स्कूल, विद्यार्थी, शिक्षक, स्थानीय आवश्यकता की पूर्ति

स्वास्थ्य–संयम संबंधी आंकलन – जन्म व मृत्यु दर, जनसंख्या नियंत्रण, घरेलू चिकित्सा, स्थानीय जड़ी–बूटी, औषधालय, व्यायाम, खेल, योग व्यवस्था, अनावश्यक आदतों का सर्वेक्षण

न्याय–सुरक्षा संबंधी आंकलन – उत्पादन, विनिमय, आचरण, व्यवहार, न्याय का आंकलन, ग्राम–सुरक्षा संबंधी आवश्यकता, अपराध व अपराधियों की संख्या

स्वराज्य सभा :–

गठन :– 10 में से 1

अर्हता :– स्वायत्त मानव, मानवीय आचरण पूर्वक जीना, 21 वर्ष

कार्य–क्षेत्र – अपनी सीमा (उदा0 ग्राम सीमा)

कार्य–काल – 4 वर्ष

कार्य–शैली – 5 समिति का गठन

लक्ष्य :– स्वायत्त मानव,

5 आयाम को सुनिश्चित करना,

समाज लक्ष्य (समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व)

कर्तव्य व दायित्व–

ग्राम सभा – समन्वयन, आवास, पेयजल, मल जल, गोबर–गैस(ऊर्जा स्रोत), शौचालय, यातायात, दूरसंचार, पाठशाला, अस्पताल, कोष, Multipurpose Hall, सभा, सांस्कृतिक सभा, छाया–खेल, विवाह, मिलन

परिवार समूह व परिवार–प्रतिनिधि –

1. स्वयं प्रमाणिक, बाकी लोगों को प्रेरणा
2. अन्य सदस्यों का मूल्यांकन
3. गलतियों को सुधारना
4. सदस्य की अर्हता ग्राम–सभा को सूचित करना
5. परस्पर परिवार में विवाद निबटारा

शिक्षा–संस्कार व्यवस्था –

शिक्षा–संस्कार समिति – 1/3 सदस्य

अर्हता – स्वायत्त मानव

उद्देश्य – स्वायत्त मानव का निर्माण

स्वरूप :–

1. व्यवहार (मानवीयतापूर्ण आचरण, जीने की कला, अर्थ की सुरक्षा व सदुपयोग के प्रति जागृति), व्यवसाय शिक्षा में पारंगत
2. साक्षर बनाना, पाठशाला की व्यवस्था
3. बाल शिक्षा, 30 से कम, 30 से ज्यादा, स्त्री–पुरूष
4. बाकी समिति के साथ समन्वयन
5. नई पीढ़ी को तैयार करना

मूल्य मूलक व लक्ष्य मूलक उत्पादन पर जोर न कि रूचिमूलक

नियम त्रय पूर्वक जीने की मानसिकता का विकास

विश्व परिवार शिक्षा–संस्कार समिति तक आपस में जुड़ा होना

उत्पादन कार्य व्यवस्था :– उत्पादन + सेवा

सलाह, प्रशिक्षण, आवश्यक सुविधा की पहचान

सामान्य आकांक्षा के संदर्भ में उत्पादन

महत्व आकांक्षा के संदर्भ में उत्पादन

पर्यावरण के साथ एकसूत्रता को सर्वोच्च वरीयता

विविध आयाम – कृषि, पशुपालन, वन व वनोपज, खनिज, हस्तशिल्प, ग्रामशिल्प, कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग, सेवा

हस्तशिल्प– चित्रकला, मूर्तिकला, बुनाई, कढ़ाई, छपाई, सिलाई, दस्तकारी, रंगाई, सूत काटना, ग्रीटिंग कार्ड्स, एम्ब्राइडरी, इनग्रेव्हिंग

ग्रामशिल्प– धातुकला, काष्ठकला, कृषि औजार, चर्मकला, बाँसकला, फर्नीचर, रेशम–उद्योग, मिट्टी बर्तन + नक्काशी, खिलौने, कपड़ा बुनाई

कुटीर उद्योग– हस्तकरघा, रेशम, कालीन, चटाई, साबुन, तेल, सेंट, क्रीम, मंजन, शैम्पु, सौंदर्य–प्रसाधन, दोना–कटोरी, आटा–चक्की, तेलघानी, धान–कुटाई, गुड़–शक्कर बनाना, अचार, जाम, मुरब्बा, रस–पेय, अगरबत्ती, काजल, जड़ी–बूटी की दवा

ग्रामोद्योग– आवास बनाने का, फल–सब्जियों का पैकिंग/संरक्षण, आवश्यक औजार, कल पुर्जों का निर्माण, कच्चे माल पर आधारित उद्योग, कूप, तालाब, नहर, सड़क बनाना

सेवा – धोबी, नाई, साइकिल, रेडियो, टी0वी0, कृषि यंत्र का मरम्मत + आवश्यक प्रशिक्षण

विनिमय–कोष व्यवस्था –

लाभ–हानि मुक्त विधि से कार्य, अपना संविधान

सामान क्रय+विक्रय करना

विनिमय बैंकिंग पद्धति पर आधारित, हर व्यक्ति का खाता

नौकरी व संग्रह की मानसिकता खत्म करना

(ब्याज रहित ऋण, आवश्यकतानुसार ब्याज)

कर–वसूली का दायित्व

स्वास्थ्य–संयम समिति –पाठ्यक्रम को शिक्षा में शामिल

समन्वित चिकित्सा

न्याय–सुरक्षा समिति – व्यवहार संबंधी विवादों का निराकरण

मानवीयतापूर्ण आचरण पद्धति, व्यवहार–प्रणाली, अर्थ की सुरक्षा व सदुपयोगात्मक नीति को गाँव में सुनिश्चित करना

अज्ञान, अत्याशा व अभाववश गलती, अपराध व अर्थ का अपव्यय

न्याय व्यवस्था मे 4 प्रधान आयाम – चरित्र, व्यवहार, उत्पादन, विनिमय – लाभ–हानि मुक्त विधि से

चरित्र न्याय– स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण व्यवहार कार्य

व्यवहार न्याय– मानव–संबंध, नैसर्गिक संबंध

उत्पादन न्याय– उत्पादन सुलभता + योग्यता विकसित करना

विनिमय न्याय– श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय (क्रय–विक्रय)

सुरक्षा :– तन–मन–धन रूपी अर्थ के सदुपयोग के आधार पर क्रियान्वयन

– ग्राम, उत्पादन व विनिमय, परिवार, शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम, नैसर्गिक, संगीत, साहित्य–कला

ग्राम सुरक्षा :– भूमि, वन, संसाधन का सदुपयोग

उत्पादन सुरक्षा :– परंपरा से श्रेष्ठ का संरक्षण

विनिमय सुरक्षा :– मूल्यांकन व श्रम विनिमय के प्रति सतर्कता

परिवार सुरक्षा :– महिमा व गरिमा का संरक्षण अंतर्विरोध मुक्ति श्रेष्ठता की सुलभता आकस्मिक मदद

शिक्षा–संस्कार सुरक्षा :– शिक्षकों का मूल्यांकन, शिक्षा की सुलभता

स्वास्थ्य–संयम सुरक्षा :– जानमाल की सुरक्षा, प्रदूषण रोकना, बुरी आदतों से सुरक्षा

नैसर्गिक सुरक्षा :– प्राकृतिक संपदा का अनुपाती प्रयोग, उत्पादन में सहायक होना

संगीत, साहित्य–कला सुरक्षा :– श्रेष्ठता का संरक्षण

मूल्यांकन – 5 समितियों का